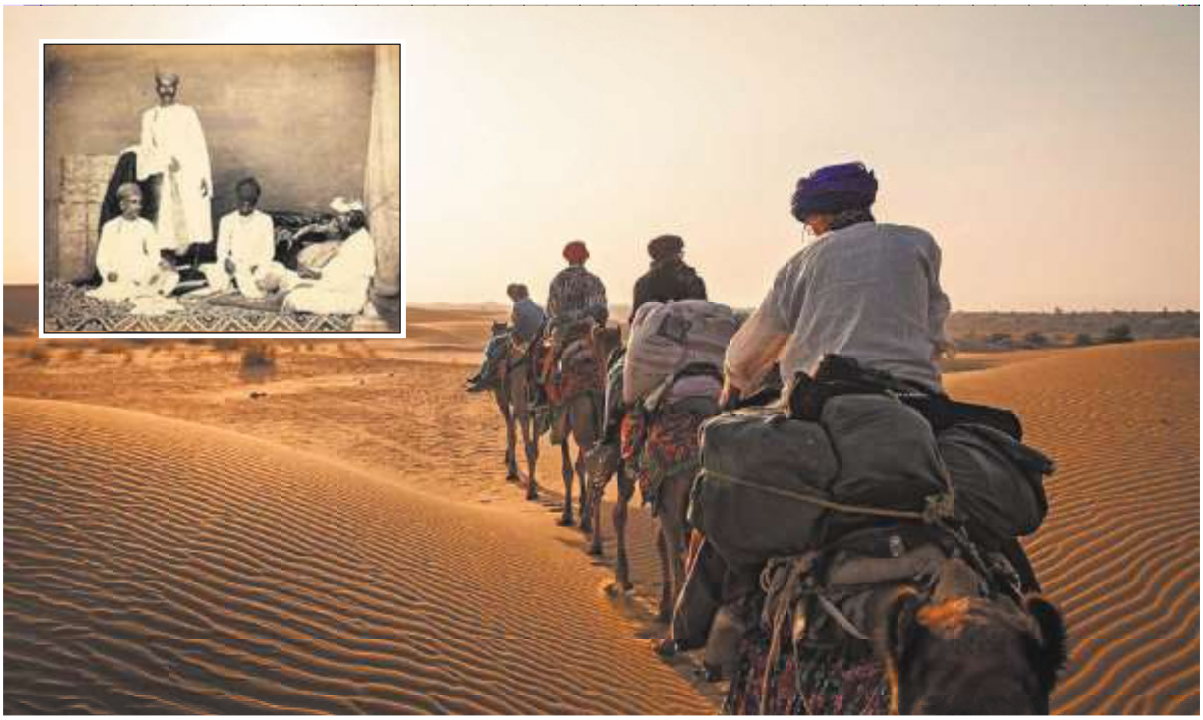

पुरसारथ रौ प्रतीक मारवाड़ी समाज

साभार: माणक राजस्थानी पत्रिका —डॉ. नृसिंह राजपुरोहित (स्व.)

पुराणै जमानै में राजस्थान (तत्कालीन राजपूताना री रियासतां) रौ घणकरौ भाग मरुस्थळी होवण सूं दूजै भारतीय प्रदेसां सूं अठै रौ जीवण न्यारौ निरवाळौ। च्यारूंमेर फैल्योड़ा मोटा-मोटा धोरा, पाणी रौ तोड़ौ, आवागमन रै साधनां री अबखाई, हर बरस दुकाळ री मंडरावती काळी छिंया अर पेट-भराई रै साधनां रौ अंगां ई अभाव। इण कारणां सूं अठै रौ जीवण घणौ अबखौ, घणौ कठोर। दुरगम मरुस्थळी भू-भाग अर पहाड़ी इलाकौ होवण रै कारण औ प्रदेस ठेट सूं मुल्क रै दूजै भागां सूं कट्योड़ौ न्यारौ ई रैयौ। जैसलमेर जिसौ इलाकौ तौ उण वखत इतरौ अडवेळौ अर दुरगम गिणीजतौ के अठै तांई पूगणौ ई घणौ अबखौ काम मानीजतौ। कवि रै सबदां में—

घोड़ा ज्यूं व्है काठ रा,

पिंड कीजै पाषाण।

लोह तणा व्है लूघड़ा,

(जद) देखीजै जैसाण॥

जैसलमेर देखण वास्तै साधारण शरीर सूं पूगणौ ई अंसभव गिणीजतौ। उण वास्तै लकड़ी रै घोड़ै, पत्थर जिसै कठोर शरीर अर लोह री पोशाक री जरूरत महसूस करीजती।

दूजी सुख-सुविधावां री तौ खैर बात छोड़ौ, पण जठै पीवण रौ पाणी ई दोरौ हाथ आवै, उठै री अबखाई रौ अंदाज सैज ई लगायौ जाय सकै। उन्हाळै में खैखड़ करती लूवां अर तवै रा उनमान तप्योड़ी धरती। हरियाळी रा कठैई

दरसण ई नीं। सैकड़ां कोसां तांई पसर्योड़ौ मरुस्थळ अर उणमें अळगा-अळगा बस्योड़ा नैना-मोटा गांवड़ा अर ढाणियां। आवागमन रौ सै सूं तेज साधन ऊंट जिकौ खेती, सवारी अर माल लादण जिसै सगळै कामां में काम आवतौ। मरुधर रौ ज्हाज वाजतौ।

इसौ अबखौ जीवण देख’ र इण अबखाई रौ दूजौ सगळौ पक्ष अठै रा मिनखां अंगेजियौ। अेक कानी प्रकृति जठै कठोर अर क्रूर होवै, उठै रौ मानखौ बलिष्ठ, हिम्मतवर, गाढवाळौ अर कष्ट-सहिष्णु होवै। उणमें उदात्त मानवीय गुण पुष्कळ रूप सूं मिलै। औ ई कारण है के इण धरती में जायौ-जनम्यौ मिनख दुनिया रै कोई खूणै में गयौ, छानौ कोनी रैयौ। आपरी मैणत, हिम्मत अर बहादुरी रै पाण वौ सदीव हरावळ में चालतौ निंगै आयौ। उदाहरणसरूप राजस्थान रै शेखावाटी इलाकै नै लेवां। औ छेत्र मरुस्थळी अर अण-उपजाऊ है, पण अठै जीवट री खेती पाकै। अठै के तौ माथौ कटाय’ र मायड़भोम री रक्षा करणिया वीर जनमै अर के विणज-वौपार में नांव उजागर करणिया लिछमी रा लाडेसर। इण धोरा धरती में जनम्योड़ा राजपूतां जुद्धभोम में जूझ’ र आपरौ जौहर बतायौ, तौ अठै रा वौपारियां आपरै बुद्धिबळ सूं देस रा खूणा-खूणा में पूग’ र आपरी धाक जमाई। औ कुदरत रौ नेम है के जिण धरती में कीं नीं मिळै, उठै रौ मानखौ सै कीं लेवण री हिम्मत राखै। अभावां रौ उपलब्धि सूं अर विफळता रौ सफळता सूं वौ ई नातौ है जिकौ आवश्यकता रौ आविष्कार सूं है। इजरायल री मरुभोम रा यहूदी पूरै यूरोप अर अमेरिका माथै छायग्या तौ राजस्थान री मरुभोम रा मारवाड़ी दुनिया रै खूणै-खूणै दिसावरां में पूगग्या।

आज देस रै मोटै-मोटै उद्योगपतियां में आधै सूं बेसी प्रवासी राजस्थानी है। मुल्क रै आधै सूं ऊपर आरथिक साधनां माथै वां रौ कब्जौ है। आपां सगळां रै वास्तै आ बात घणी गरब अर गुमेज री है। पण इण स्थिति में पूगण वास्तै कितरी पीढियां री हिम्मत, मैणत अर लगन काम आई, वा अेक विचारणजोग बात है। आज देस में जिका नांवचीन उद्योगपति निजर आवै, वांरा दादा-पड़दादा किण हालत में राजस्थान सूं बारै निकळिया होसी अर किण विकट परिस्थितियां में रैय’ र वां विणज-वौपार कियौ होसी, उणरी कल्पना ई आज नीं की जाय सकै।

आज सूं दो-तीन सौ बरसां पैली नीं तौ आपणै अठै रेलगाडियां ही अर नीं मोटरां। हवाई जहाज इत्याद री तौ कल्पना करणी ई बेकार ही। उण हालात में ई राजस्थानी वौपारी बंगाल सूं लगायनै आसाम-सिक्किम रै अबखै भाखरां तांई पूगग्या अर अठीनै अहमदाबाद-मुंबई सूं लगायनै धुर दक्खिण तांई फैलग्या। कोई गांवड़ौ के कस्बौ इसौ नीं, जठै नैनौ-मोटौ राजस्थानी वौपारी नीं लाधै।

जात्रा उण वखत ऊंटां-घोड़ां माथै होवती या पैदल। रेलवे टेसण पकड़ण सारू केई दिनां तांई ऊंटां माथै बैठ’ र जात्रा करणी पड़ती। सुरगवासी सेठ जी.डी. बिड़ला रै दादौसा शिवनारायणजी २३ बरस री उमर में जद पैलड़ी वळा मुंबई गया तौ पिलाणी सूं ठेट खंडवा तांई ऊंटां माथै गया हा। खंडवै पूगण में वां नै पूरा बीस दिन लाग्या। उण जमानै में रेलवे लाईन खंडवां सूं मुंबई तांई बण्योड़ी ही। मारग में चोर-धाड़वियां रौ अणूंतौ डर रैवतौ, इण वास्तै परदेसां गयोड़ा लोग बठै पूग’ र तीन-तीन, च्यार-च्यार बरसां रौ लांबौ बगत बितायां अबखी मुसाफरी करनै पाछा घरां आवता। टाबर-छोरुवां नै सागै लिजावण रौ सवाल ई नीं हौ। इण कारण कुटुंब परिवार राजस्थान रै गांवां में रैवता अर खुद काळा कोसां दूर असैंधी धरती अर अणजाण बस्ती में दिन काटता। उण जमानै में डाक-टपाळ री ई कोई व्यवस्था नीं ही। इण भांत अलेखूं अबखाइयां ही जिणां रौ हिम्मत सूं मुकाबलौ करनै राजस्थानी वौपारी समाज आगै बधियौ।

प्रवासी राजस्थानी जिण भांत आगै बधियौ, उणरौ मूळ कारण उणरौ गुणवान अर चरित्रवान हुवणौ है। वौ जठै कठै ई गयौ, उठै रौ ई बणग्यौ अर उण प्रदेस री तरक्की में दिलोजान सूं सहयोग दियौ। वौ कठैई लोगां री आंख में घाल्यौ ई नीं खटक्यौ। आपरै उत्तम चारित्रिक गुणां रै कारण उणै सगळी ठौड़ां आपरौ सिक्कौ जमाय लियौ। आसाम-बंगाल में तौ उण जुग में ‘मारवाड़ी बाबू’ देवता रै उनमान पुजीजग्यौ। उठै री प्रजा रौ उण माथै अणूंतौ विसवास हौ। कोर्ट-कचैडियां में उणरी साक्षी प्रामाणिक मानीजती अर खाली जबान माथै लाखां रौ विणज-वौपार चालतौ। आसाम में तौ आ हालत ही के उठै रा लोग उत्तराखंड री तीरथ जात्रा माथै जावता अर घर रा बूढ़ा-ठाडा माईतां अर टाबरां नै मारवाडियां रै घरां में सूंपनै जावता। वांनै भरोसौ हौ के इण घरां में वां री पूरी देखभाळ होसी, वां नै कोई तकलीफ नीं पड़सी।

विणज-वौपार रै मामलै में राजस्थानी कद सूं बारै जावणा सरू हुया, इण बाबत विचार करां तौ जाण पड़ै के आ परंपरा खासी जूनी है। इतिहास में इणरा दाखला ठेट मुगल काळ सूं मिलै। अठारवीं सदी में जगत सेठ (मारवाड़ी ओसवाळ) रौ परिवार बंगाल रै नवाबां अर नाजिमां रौ बैंकर हौ। प्रमुख इतिहासकार कर्नल टॉड १८३२ में लिख्यौ है— ''भारत में दस में सूं नव बैंकर अर वौपारी मारवाड़ रा वासी है अर घणकरा जैन है।' '

राजस्थानियां रौ घणौ प्रवसन अंगरेजां रै जमानै में हुयौ। १८५७ रा गदर रै बाद देस में रेल लाईणां रौ जाळ-सो बिछग्यौ। इणसूं देस रा प्रमुख नगर रेल-मारग सूं जुड़ग्या अर आवागमन सोरौ होयग्यौ। इण कारण राजस्थान सूं बारै जावण री प्रक्रिया में १८६० सूं लगायनै १९०० तांई खासी तेजी आई। गांवां सूं लोगां रा टोळा-रा-टोळा कमाई वास्तै बारै जावण लाग्या। औ काम दूजै री मदद सूं बेसी हुयौ। अेक गांव, अेक जात के अेक इलाकै रा लोग बारै जायनै कठैई थाल पड़ग्या तौ उणां लारला सैकड़ूं जणां नै खांच लिया।

उण जमानै में मुंबई अर कलकत्तौ मोटा बंदरगाह होवण सूं वौपार रा प्रमुख ठिकाणा गिणीजता। इण कारण राजस्थानी प्रवासियां रौ प्रवसन इण दोनूं नगरां कानी बेसी हुयौ। बीकानेर अर शेखावाटी रा घणकरा लोग आसाम-बंगाल कानी गया तौ मारवाड़-मेवाड़ रा लोग महाराष्ट्र अर मध्य भारत अर दक्खिण कानी। महाराष्ट्र अर मध्य प्रदेस में राजस्थानी पैली मराठां रा बैंकर अर वांरी फौजां में ठेकेदार बण्या अर इणरै पछै वौपार रै छेत्र में आया। मराठां सूं राजस्थानी वौपारियां रौ संपर्क वां रै राजस्थान आक्रमण री वखत हुयौ होसी। महाराष्ट्र में राजस्थानियां नै गुजराती वौपारियां सूं मुकाबलौ करणौ पड़्यौ। प्रामाणिक इतिहास सूं जाणकारी मिळै के मध्य भारत में मारवाड़ी फर्मां १७८० रै पैली ई थापित होयगी ही। अेक अंगरेज जात्री जॉन मेलकॉम १८२९ में लिखै— ''मध्य भारत रा सगळा साहूकार अर सराफ घणकरा बाणिया है, जिकौ के तौ गुजराती है अर के मारवाड़ी।' '

उत्तरी भारत में खुरजा, हापुड़, हाथरस, फिरोजाबाद अर मिरजापुर इत्याद नगर जिका अनाज री प्रमुख मंडियां ही, १९वीं सदी तांई सगळी राजस्थानियां रै कब्जै में आयगी ही। सरुपांत में अठै वां नै पंजाबी खत्रियां सूं करड़ौ मुकाबलौ करणौ पड़्यौ, पण सेवट सिक्कौ इणां रौ जम्यौ।

इण सगळी सफळता रै लारै राजस्थानी वौपारियां री मैणत, हिम्मत अर धंधै रै प्रति लगन काम करै ही। राजस्थानी में अेक कहावत मशहूर है के— ''इंसान सौ कोस जावै तौ ई उणनै आपरै घर रौ खूणौ दीसै।' ' मुंबई अर कलकत्तै जिसी महानगरियां में जाय नै ई अै लोग मरुस्थळ रै काळै कैरां अर सूखै खेजड़ां नै भूल्या कोनी। मुंबई री चौपाटी अर कलकत्तै री चौरंगी माथै घूमता थकां ई आं नै आपरी धोरा-धरती याद रैयी। इण वास्तै कमाई रै सागै मितव्ययता बरत' र इण लोगां 'कूकौ खायनै कण रौ संचय कियौ' । राजस्थानी चरित्र रौ औ सै सूं मोटौ गुण है, जिणरै कारण समाज कमाई करनै कीं पईसा बचाय सक्यौ।

धंधैवाड़ी रै हिसाब सूं सरूपांत में सगळा आपरी हैसियत मुजब नैनी मोटी दुकानदारियां अर ब्याज माथै रकम देवण रौ काम सरू कियौ। इणरै पछै दलाली अर आढत रौ धंधौ पकड़्यौ। होळै-होळै भागीदारी सूं मोटा धंधा में हाथ घाल्या अर सेवट उद्योग रैे छेत्र में पूंजी लगायनै उद्योगपति बणग्या। पण इण प्रक्रिया सूं गुजरतां वां नै जिकौ अनुभव हुयौ, अर बीच में आयोड़ी अबखाइयां रौ जिण भांत उणां मुकाबलौ कियौ, उणरी चरचा विस्तार सूं होवणी जरूरी है।

पैलै विश्व जुद्ध तांई राजस्थानी प्रवासी उद्योग रै छेत्र में हरावळ में नीं हा। केई फर्मां आयात-निर्यात में आपरा पग आछी तरियां जमाय लिया हा। पण उद्योग रै छेत्र में राजस्थानी रौ प्रवेस जुद्ध री वखत अर बाद में ई हुयौ। १९०६ में कलकत्तै बंदरगाह सूं जितरौ सूती कपड़ौ आयात होवतौ, उणमें भारतीय वौपारियां रौ हिस्सौ फगत दस प्रतिशत हौ। पण १९२८ तांई औ हिस्सौ पचास प्रतिशत रै लगैटगै पूगग्यौ। १९१७ में बिड़ला बंधुवां सै सूं पैली पटसन रै निर्यात वास्तै लंदन में आपरौ ऑफिस खोल्यौ। इण पछै केई राजस्थानी पटसन उद्योग रै छेत्र में आया अर सफळ हुया। केई राजस्थानी फर्मां जावा सूं खांड अर जापान सूं सीमेंट रै आयात रौ काम करण लागी अर विदेसी फर्मां नै मात देय दी।

पैलै विश्वजुद्ध री वखत सरकारी सहायता रै कारण भारत रै औद्योगिकरण नै टेकौ मिळ्यौ। पूरबी भारत में पैलड़ी बार इसै उद्योगां री थापणा हुई जिणां रा मालिक भारतीय अर खासकर प्रवासी राजस्थानी हा। औद्योगिकरण रौ

औ विस्तार कोई संजोग मात्र नीं हौ। इणरौ प्रमुख कारण जापानी कपड़ै रै आयात सागै पटसन अर सूत री दिनौदिन बधती मांग ही। इणसूं राजस्थानी फर्मां नै आछौ चांस मिळ्यौ अर वां री स्थिति मजबूत होयगी। इण फर्मां में केशोराय पोद्दार अर बिड़लां री फर्मां प्रमुख ही। १९११ में जापानी कपड़ै रौ भारत में आयात करण वाळी पैली फर्म बिड़लां री ई ही।

यूं सरुपांत में मुंबई में कपड़ा मिलां री थरपणा गुजरातियां अर पारसियां रै हाथां सूं हुई। पारसियां में टाटा परिवार भारत में बिजळी, इस्पात अर वनस्पति उद्योगां री सरुआत करी। पण इणसूं ई पैली अेक प्रमुख राजस्थानी प्रवासी राजा गोविंदलाल पित्ती १८७० में दो कपड़ै री मिलां खरीद ली ही। दूजा राजस्थानी कपड़ा उद्योग में १९३०-३१ रै बीच में आया। मुंबई में करीम भाई पेटिट री केई मिलां जद फैल होयगी तौ घणकरी राजस्थानी प्रवासियां खरीदली। इणरै अलावा कलकत्ता री केई कपड़ा मिलां ई राजस्थानियां रै हाथां आयगी। बीसवीं सदी रै चौथै दशक तांई देस में कपड़ै री प्रमुख मिलां मांय सूं तीस प्रवासी राजस्थानियां रै कब्जै में ही।

देस में टाटा रै बाद बिड़ला सै सूं मोटा उद्योगपति बाजता। इणां आपरी पैलड़ी जूट मिल १९१९ में कलकत्तै में खोली ही। इणी' ज बरस इंदौर रै प्रमुख बैंकर सर सरूपचंद हुकमचंद ई कलकत्तै रै कनै अेक मोटी पटसन मिल सरु करी ही। इणी' ज भांत फर्म सूरजमल नागरमल रै संस्थापक सूरजमल जालान १९२७-२८ में अर अफीम रै प्रमुख सटोरियै हरिदत्त चामडियै री फर्म ई पटसन मिलां री सरुआत करी।

कलकत्तै में यहूदी अर अमेरिकन उद्योगपतियां रौ मुकाबलौ करण वाळा राजस्थानी प्रवासी ई हा। इण लोगां जिकी पटसन मिलां सरु करी, वै देस री प्रमुख पटसन मिलां ही। बिड़ला बंधुवां दिल्ली में १९२० में अेक कपड़ै री मिल थापित करी अर १९२२ में इन्दौर में भंडारी बंधुवां ई अेक कपड़ा मिल सरु करी। इणी' ज भांत पूरै मध्य भारत में केई ठौड़ राजस्थानियां री कपड़ा मिलां काम करै ही। व उद्योग रै अलावा केई प्रवासी बंधुवां कोयलै अर चाय बागान रै छेत्र में ई प्रवेस कियौ अर १९२० रै बाद केई कोयला खानां अर चाय बागान खरीद लिया।

दूजै उद्योगां रै ज्यूं खंडसारी उद्योग कानी राजस्थानियां रौ ध्यान १९३२ में गयौ। इण वखत तांई सरकारी नीति रै कारण केई चीणी मिलां री थरपणा होयगी ही। १९३२ में बिड़ला बंधुवां तीन अर डालमिया कंपनी अेक चीणी मिल सरू करी। सेक्सरिया बंधु मुंबई रै कपड़ा उद्योग में आगीवाण हा, उणां अर खेतानां ई केई चीणी मिलां सरु करी। रामकृष्ण डालमिया सिमेंट उद्योग में प्रमुख बणग्या अर इणी' ज भांत केई राजस्थानियां उद्योग रै न्यारा-न्यारा छेत्र में आय' र सफळता पाई।

आ सरुपांत री स्थिति है जद प्रवासी राजस्थानियां उद्योग रै छेत्र में आपरा पग रोप्या ई हा। उणरै पछै तौ उणां इण छेत्र में कितरी तरक्की करी, वा कोई सूं छानी कोनी। खासकर आजादी मिळ्यां पछै राजस्थानियां उद्योग रै छेत्र में जिकौ काम कियौ, वौ घणौ सरावणजोग है। कोई पण कौम री कीमत उणरै कामां सूं ई होवै। जिकौ गुण राजस्थानी प्रवासियां रै खून में मिळ्योड़ौ है, वौ इण धरती री कीरत अर तासीर नै उजागर करै।

नैनी-मोटी दुकानदारी सूं बड़ै-बड़ै औद्योगिक प्रतिष्ठानां तांई पूगण री इण जात्रा में मैणत, हिम्मत, लगन अर सूझ-बूझ री जरूरत होवणी तौ पैली बात ही, इणरै अलावा प्रवासी समाज बारै जाय' र जिण ढंग सूं हिळ-मिळ नै रैयौ, अेक दूजै री मदद करी अर संगठित रूप सूं आगै बढ्यौ, वा घणी सरावणजोग बात है। अेक-दो प्रामाणिक उदाहरण सूं इण बात री पुष्टि होय जासी—

सेठ नाथूराम सराफ मंडावा (शेखावटी) रा वासी हा, जिणां सरुपांत में कलकत्तै आय' र मुनीम रै रूप में काम कियौ। धीरै-धीरै आपरौ खुद रौ नैनौ-मोटौ धंधौ सरू कियौ, जिणमें वां नै आछी सफळता मिळी अर वै लूंठा पूंजीपति बणग्या। वां रै बारै में अेक जाणकार लिख्यौ है— ''सेठ नाथूराम रै मन में आपरी बिरादरी रै प्रति घणी सहानुभूति ही। उणां प्रवासी राजस्थानियां वास्तै चित्तपुर रोड रै नाकै माथै अेक वासौ (लॉजिंग-बोर्डिंग) खोल राख्यौ हौ, जठै वै आराम सूं रैय सकै हा। उणां आपरै गांव मंडावा अर शेखावाटी छेत्र सूं केई रिस्तेदारां अर ओळखीतां नै कलकत्तै बुलाया अर वां री हर तरै सूं मदद करनै पगां माथै किया। कलकत्तै री सूतापट्टी छेत्र में आज ई मंडावा री मोकळी दुकानां है, जिणां रौ अेक मात्र कारण सेठ नाथूराम है।' '

इणी' ज भांत सेठ सूरजमल झुझुणुवाळै ई कलकत्तै में आपरी तरफ सं ू अेक वासौ खोल राख्यौ हौ, जठै प्रवासी राजस्थानी मुफ्त में जीम सकै हा। सेठ सूरजमल खुद आपरै सुसरै प्रेमसुखदास कायां री मदद सूं कलकत्तै आय ' र विणज-वौपार सरु कियौ हौ। प्रेमसुखदास ई १९वीं सदी रै चौथै दशक में रामगढ रै जुगलकिशोर रुइया री मदद सूं कलकत्तै आया हा। इण भांत 'तुळसीदास सेती हड़मत मिळिया अर हड़मत सेती राम' ।
राजस्थानवासियां में अेक दूजै री मदद करनै उणनै आगै बढावण रौ अर हिळ-मिळ नै संगठित रूप सूं रैवण रौ नामी गुण है। इणसूं अै लिछमी रा लाडेसर बिना कोई भेद-भाव रै अेक दूजै री मदद सूं विणज-वौपार में आगै बढता गया।

राजस्थानवासियां रै चरित्र में अेक गुण औरूं उल्लेखजोग है के वै कमावणौ जाणै तौ उणनै पाछौ खरच करणौ ई जाणै। आज राजस्थानियां रा सैकड़ूं कांई हजारूं 'चेरिटेबल ट्रस्ट' बण्योड़ा है, जिका मानव-कल्याण खातर खुलै हाथ सूं खरच करै। राजस्थानवासियां री मूंघी कमाई रै पाण आज देस में इसी मोकळी संस्थावां है जिकी शिक्षा, चिकित्सा अर समाजसेवा रै छेत्र में काम करै अर हर बरस करोड़ां रुपिया खरच करै। आजादी सूं घणा पैली थरपित 'मारवाड़ रिलीफ सोसायटी' जिसी अेकली संस्था रौ सालीणौ बजट उण वखत ई लाखां रुपियां रौ हौ। पूरै देस में मिंदरां, तीरथां, धरमशाळावां अर पुन्न खातै जितरौ पईसौ आं लिछमी रा लाडेसरां राजस्थानी समाज रौ लाग्योड़ौ है, उतरौ किणी रौ ई कोनी। राजस्थानी परिवारां रा बण्योड़ा मिंदर तौ कला-कौशल अर स्थापत्य री निजर सूं संसार री अमोलक चीजां है, जिकी देखियां ई बण आवै। इणी' ज भांत विद्यालय, अस्पताळ अर दूजी मानवोपयोगी संस्थावां रौ तौ छेह ई कोनी जिकी आं लाडेसरां री मदद सूं चालै।

सही बात आ के समाजसेवा रै छेत्र में राजस्थानवासियां रौ कोई मुकाबलौ ई नीं। बिड़ला, बांगड़, बजाज, साहू, जैन, मोदी, सिंहानिया, रुइया, पौद्दार, हिम्मतसिंहका, मालपाणी, डालमिया, राजगढिया, नवलगढिया, केडिया, टाटिया इत्याद अणगिण इसा परिवार है ज्यांरौ इण छेत्र में गजब रौ योगदान है। तारीफ री बात आ के वौ निरंतर वधतौ जाय रैयौ है।

इटली रै रणखेत 'थरमोपोली' री राजस्थान सूं तुलना करतां अेक कवि साव साची कही के इटली में तौ फगत अेक 'थरमोपोली' है अर राजस्थान री पावन धरा माथै तौ ठौड़-ठौड़ 'थरमोपोलियां' बिखरी पड़ी है। अठै हर गांव-गळी घमसाण हुया, जुग-जुग में आगीवाण हुया।

इणी' ज भांत अठै गांव-गांव अर घर-घर में भामाशाह रा वंशज भर्या पड़्या है, जिका असर आयां आपरै जीवण भर री पसीनै री कमाई आछै काम सारू निछरावळ करतां अंगां ई जेज नीं लगावै।

समाजसेवा अर धरम रा छेत्र रै ज्यूं राजनीति रा छेत्र में ई राजस्थानी लाडेसरां रौ योगदान कम कोनी रैयौ। बंगाल रै इण अेक उदाहरण सूं इण बात री पुष्टि भली भांत होय जावै के— बंगाल सरकार रै अेक सुरक्षा अधिकारी मि. अे.अेच. गजनवी सन् १९३० में आपरै अेक गोपनीय कागद में भारत रै वायसराय रा प्रतिनिधि मि. कनिंघम नै लिख्यौ के बंगाल में चालतै गांधी आंदोलन नै जे मारवाड़ी समाज री मदद बंद होय जावै तौ औ आंदोलन मतै ई खतम होय जावै। मि. गजनवी वायसराय नै दो सूचियां भेजी, जिणां में उण राजस्थानी प्रवासियां रा नांव हा जिकौ स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हा। इण शिकायत माथै केई लोग गिरफ्तार हुया अर वां रा बहीखाता जबत करीज्या। पण वां लाडेसरां नै अंगरेज झुकाय नीं सक्या।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नै आरथिक मदद देयनै पगां करण रौ प्रमुख श्रेय प्रवासी राजस्थानियां नै ई है। सेठ जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिड़ला अर प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका जिसा नरपुंगव तौ कांग्रेस रा प्रमुख थंभ रैया। इणां रै पाण ई महात्मा गांधी राष्ट्रव्यापी आंदोलन नै गतिशीळ कर पाया। कांग्रेस रा सगळा प्रमुख फैसला राजस्थानियां री इमारतां हेठल ई हुया अर गांधीजी तौ शरीर ई उठै ई छोड़्यौ।

देस रै आरथिक अर औद्योगिक विकास में प्रवासी राजस्थानी लाडेसरां रौ योगदान तौ जगजाहिर। राजस्थानी परिवारां देस रै आरथिक विकास सारू जिकौ काम कियौ, उणरौ लेखौ-जोखौ होवणौ हाल बाकी है। इण परिवारां आपरै नांव सागै मायड़ भोम रा नांव नै ई उजागर कर दियौ। नवलगढ सूं गयोड़ा नवलगढिया बाज्या, तौ राजगढ सूं उठ्योड़ा राजगढिया। लोह रौ वौपार कियौ तौ इसौ डंकौ बजायौ के खुद लोहिया बाजण लागा अर

रूई रै धंधै में घुस्या तौ इसी धाक जमाई के खुद ई रुइया बणग्या। कपड़ै रौ धंधै करनै बजाज पीढियां रै वास्तै बजाज बणग्या तौ रंग रौ धंधौ करनै सदा-सर्वदा खातर रंगवाळा होयग्या।

वखत रौ वायरौ बडौ प्रबळ गिणीजै। फेरूं इण वैज्ञानिक जुग रै मौजूदा दस-बीस बरसां में जिण झड़प अर तेजी सागै पूरै मानव समाज में बदळाव आयौ, वौ लारलै सौ-पचास बरसां में ई कोनी आयौ। इणरौ असर राजस्थान री नुंवी पीढी माथै ई पड़्यौ। इणसूं आज हालत आ बणगी के खासकर औद्योगिक घराणां री नुंवी पढी में 'राजस्थानीपणौ' कम होवतौ जाय रैयौ है। घनश्यामदासजी बिड़ला जठा तांई मौजूद हा, वै आपरै संस्थानां में पक्की परख कियां पछै बेसी सूं बेसी राजस्थानियां नै ई राखता अर वां रै सागै बात-बतळावण राजस्थानी भाषा में ई करता। इणसूं भावनात्मक संबंध विसवास अर अपणापौ बण्यौ रैवतौ अर राजस्थानियां रै खून में मिळ्योड़ै चारित्रिक गुणां रौ संस्थानां नै लाभ मिळतौ, जिणसूं वै फूलता-फळता। भाषा संस्कृति री वाहक गिणीजै, इण कारण जे नुंवी पीढी आथूणै रंग में रंगीज' र आपरी बुनियादी जड़ां नै भूलगी तौ वा घाटै में रैसी। आ बात सही के नुंवौ सै कीं खराब कोनी अर पुराणौ सै कीं आछौ कोनी। पण विवेक सूं विचार करां तौ नुंवै री चमक-दमक में पुराणी आछी बातां नै भूलण रौ खतरौ बेसी है। इण कारण नुंवी पीढी नै आ बात गांठ बांधणी पड़सी के जे वां रौ 'राजस्थानीपणौ' खतम होयग्यौ तौ सै कीं खतम हुय जासी। लिछमी रा लाडेसर इण समाज री पीढी कनै खुद री जड़ां हरावळ में रैवणी जरूरी है।

देस री मौजूदा राजनैतिक अर सामाजिक परिस्थितियां नै देखतां सगळै प्रवासी राजस्थानियां नै संगठित करणौ घणौ जरूरी। आं नै संगठित कियां देस री अखंडता नै बळ मिळसी अर विग्रहवादी उग्र शक्तियां रौ नास होसी। कारण के राजस्थानी समाज मूळ रूप सूं पक्कौ राष्ट्रवादी, शांतिप्रिय अर कठोर परिश्रमी है।

मायड़भोम रा इतरा लूंठा सपूत होवता थकां ई अठै री धरती नै उणां रौ कोई विशेष लाभ नीं मिळ रैयौ है। राजस्थान हर नजरियै सूं आज बुनियादी ढांचै (इन्फ्रास्ट्रक्चर) री दीठ सूं किणी प्रान्त सूं लारै नीं है, अबै पैली जैड़ी अठै री स्थितियां कोनी। जमीन-आसमान रौ फरक आयग्यौ है अठै। प्रवासी लाडेसर राजस्थान आवै अर इण मरुधरा नै निरखै तौ औ फरक सफा निगै आ जासी अर चहुंमुखी विकास अठै रै औद्योगिक ढांचै नै मजबूत बणावण में आं लिछमी रा लाडेसरां री घणी जरूरत है। वां री प्रतिभा रौ उपयोग आपरै प्रदेस रा लोगां नै खुशहाल करण में ई होवणौ चाइजै। आज राजस्थान री सांवठी राजनैतिक आवाज नीं होवण सूं सगळै मामलां में राजस्थान घणौ लारै है। अठा तांई के हर तरै सूं हकदार हुयां रै बावजूद उणरी मायड़भाषा राजस्थानी नै संविधानिक मानता तकात कोनी मिळी है। इण सारू कुण कितरौ दोषी है, आ सोचण-विचारण री बात है। संगठित राजनैतिक आवाज मिळ्यां अर आपरी संस्कृति, भाषा, साहित्य नै टेकौ दियां ई लिछमी रा आं लाडेसरां रौ सार्वजनिक हित में कियोड़ौ काम सोनै रा आखरां में लिखीजसी।

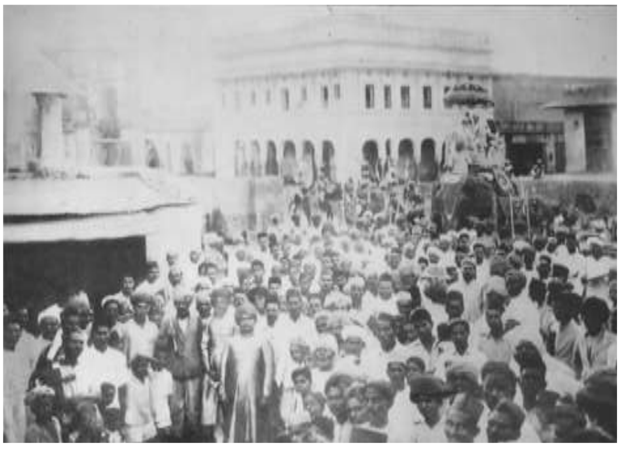

मारवाडियां रौ प्रवसन

बीसवीं सदी री सरुआत में राजस्थान सूं प्रवास रौ सिलसिलौ कितरौ तेज रैयौ, इणरी जाणकारी जणगणना रा आंकड़ा सूं ई मिळै। १९०१ री जनगणना मुजब उण वखत मुंबई नगर री कुल जनसंख्या दस लाख ही, जिणमें अेक लाख पचास हजार वौपारी हा। वौपारियां में तेरा हजार प्रवासी राजस्थानी हा जिकौ खासकर क्रापेड मार्केट भूलेश्वर छेत्र अर काळबादेवी रोड माथै बस्योड़ा हा, इण तेरा हजार में सूं दो हजार उदैपुर रा, अेक हजार बीकानेर रा, सात हजार पांच सौ जोधपुर रा अर अेक सौ जैपुर रियासत रा हा। आं आंकड़ा सूं इण बात री ई जाण पड़ै के उण बरस मुंबई पूगणिया प्रवासी किण-किण धंधा में लाग्या। जाणकारी मुजब कलकत्तै में १८१३ में राजस्थानी प्रवासियां री कुल संख्या फगत अस्सी ही, जिकौ २० बरसां पछै छह सौ हुई। १८९१ अर १९११ रै बिचाळै आ संख्या वधती-वधती पच्चीस हजार तांई पूगगी। इण तरै आ बात सिद्ध होवै के ज्यूं-ज्यूं वखत बदळतौ गयौ अर जावण-आवण रा साधन सुधरता गया, राजस्थान सूं वत्तै सूं वत्ता प्रवासी दूजै प्रांतां में जावता रैया।

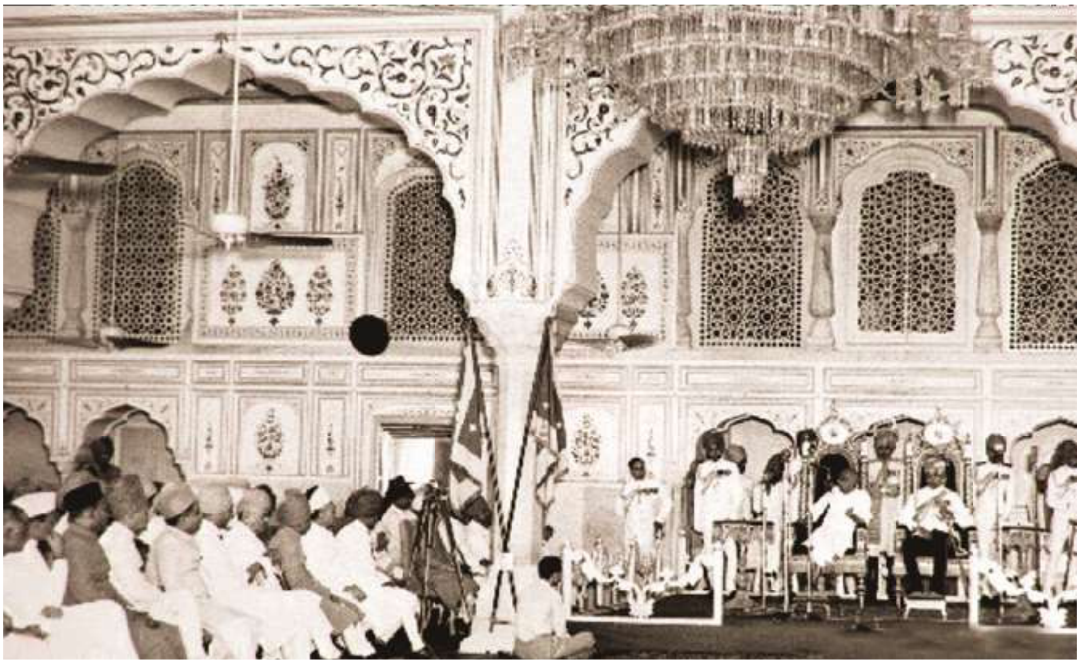

राजस्थान निरमाण री पृश्ठभूमि

यूं बणियौ राजस्थान

हर बरस ३० मार्च रै दिन 'राजस्थान दिवस' मनाईजै, क्यूंकै इण दिन 'राजस्थान' रौ अस्तित्व उभर' र सामी आयौ। राजस्थान निरमाण री पृष्ठभूमि नै देख्यां ठाह पड़ै के भारत री आजादी मिलियां राजस्थान 'राजपूताना' रै नांव सूं जाणियौ जावतौ हौ, जिण मांय १९ रियासतां— उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, बूंदी, कोटा, सिरोही, करौली, जैसलमेर, जयपुर, अलवर, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, झालावाड़, भरतपुर, धौलपुर, टोंक अर ३ ठिकाणा— निमराणा, लावा अर कुशलगढ रै अलावा अजमेर-मेरवाड़ा रौ ब्रिटिश शासित प्रदेश सामल हौ। रियासतां में सगळां सूं जूनौ राज मेवाड़ हौ, जिणरी थरपणा ५६५ ईसवी रै लगैटगै गुहिल करी अर साव नवी अटंग रियासत झालावाड़ ही, जिकी अंगरेजां रै मतै-मंसा सूं सिरफ १८३ बरसां पैली १८३७ ई. में झाला मदनसिंह थरपी। २३३१७ वरग मील छेत्र मांय फैल्योड़ी बीकानेर रियासत सगळां में मोटी अर ४०५ वरग मील में फैल्योड़ी शाहपुरा रियासत सगळां में नैनी, साव छीनी-सीक रियासत ही। आजादी रै बाद आं सब रौ सात चरणां में विलीनीकरण हुवण सूं इण प्रांत रौ नांव 'राजस्थान' राज्य रै रूप में अस्तित्व में आयौ।

'राजस्थान' रौ वरतमान सरूप सात चरणां री प्रक्रियावां रौ परिणाम है—

सरबप्रथम १७ मार्च, १९४८ नै 'मत्स्य संघ' री थरपणा हुयी, जिण मांय अलवर, भरतपुर, धौलपुर अर करौली राज्यां रौ विलीनीकरण करीजियौ। 'मत्स्य संघ' री राजधानी अलवर नै बणायौ गयौ अर धौलपुर नरेश राजप्रमुख अर अलवर नरेश उप राजप्रमुख बणाईजिया। अलवर रा शोभाराम री अध्यक्षता में मंत्रिमंडल बणियौ जिण में जुगलकिशोर चतुर्वेदी (भरतपुर), मंगळसिंह (धौलपुर), भोळानाथ (अलवर), गोपीलाल यादव (भरतपुर) अर चिरंजीलाल शर्मा (करौली) मंत्री बणिया। 'मत्स्य संघ' री कुल जमीन ७५३६ मील मुरब्बा, आबादी १८,३७,९९४ अर सालाना आमद १९,३०६ करोड़ रिपिया ही। भरतपुर किलै मांय भारत सरकार रा मंत्री एन.वी. गाडगिल 'मत्स्य संघ' रौ विधिवत् उद्घाटन करियौ।

विलीनीकरण रै दूजै चरण में २५ मार्च, १९४८ नै ९ रियासतां नै मिलाय' र 'राजस्थान संघ' रौ निरमाण कर्यौ गयौ। इण मांय कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ, किशनगढ, टोंक अर शाहपुरा रियासतां सामल करीजी। 'राजस्थान संघ' री राजधानी कोटा नै बणाय' र कोटा रै महाराव नै राजप्रमुख अर डूंगरपुर रै महारावल नै उप राजप्रमुख बणायौ गयौ। शाहपुरा रा गोकुललाल असावा प्रधानमंत्री मुकर हुया। इण संघ री कुल जमीन १६८०७ मील मुरब्बा, आबादी २३,३४,२२० अर सालाना आमद १ करोड़ ९० लाख रिपिया ही। इणरै तीन दिन बाद ई उदयपुर रा महाराणा ई भारत सरकार रै रियासती मंत्रालय नै पत्र भिजवाय' र इण नवै 'राजस्थान संघ' मांय सामल हुवण री इंछा प्रगट करी।

विलीनीकरण रै तीजै चरण रै रूप में १८ अप्रेल, १९४८ नै उदयपुर रियासत रौ 'राजस्थान संघ' मांय विलय कर' र नवौ नांव 'संयुक्त राजस्थान' राखियौ गयौ। इणरौ उद्‌घाटन उणी दिन करीजियौ। इण 'संयुक्त राजस्थान' री खास ठसकाई आ ही के इण रौ दबदबौ सुण' र भारत रा प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू खुद १८ अप्रेल नै उदयपुर पूग' र इण संघ रौ उद्‌घाटण करियौ। उदयपुर नै 'संयुक्त राजस्थान संघ' री राजधानी बणाय' र वठा रै महाराणा भूपालसिंह नै राजप्रमुख, कोटा महाराव भीमसिंह नै उप राजप्रमुख अर माणिक्यलाल वर्मा नै प्रधानमंत्री बणायौ गयौ। गोकुललाल असावा, प्रेमनारायण माथुर, भूरेलाल, मोहनलाल सुखाडिया, भोगीलाल पांड्या, अभिन्नहरि अर ब्रजसुंदर शर्मा मंत्री बणाईज्या। 'संयुक्त राजस्थान' री जमी २९९७७ मील मुरब्बा, आबादी ४२,६०,९१८ अर सालाना आमद ३१,६६७ करोड़ रिपिया ही।

विलीनीकरण रै प्रमुख चौथै चरण में ३० मार्च, १९४९ नै जयपुर मांय आयोजित भव्य समारोह मांय 'वृहत् राजस्थान' रौ उद्‌घाटन करियौ गयौ अर इणरौ निरमाण 'संयुक्त राजस्थान' मांय जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर जैसलमेर रियासतां रौ विलीनीकरण ई कर लियौ गयौ। इण समारोह मांय सरदार पटेल जयपुर महाराजा मानसिंह नै राजप्रमुख, कोटा महाराव भीमसिंह नै उप राजप्रमुख अर हीरालाल शास्त्री नै नवै राज्य रै प्रधानमंत्री पद री शपथ दिरायी। प्रेमनारायण माथुर, सिद्धराज ढड्ढा, भूरेलाल बया, शोभाराम, फूलचंद बाफणा, वेदपाल त्यागी, रावराजा हणुवंतसिंह अर नरसिंह कछवाहा मंत्री बणाईज्या। 'वृहत् राजस्थान' रै निरमाण री तिथि ३० मार्च राजस्थान रौ स्थापना दिवस अंगेजीजियौ, नतीजन हर बरस इण तिथि नै 'राजस्थान दिवस' मनाईजण लागियौ।

'वृहत् राजस्थान' रौ निरमाण हुयां १५ मई, १९४९ नै 'मत्स्य संघ' ई उण मांय मिलाय लियौ गयौ। औ पांचवौं चरण हौ।

छठै चरण में आबू-दिलवाड़ा नै टाळ' र सिरोही रौ विलय २६ जनवरी, १९५० नै करीजियौ।

१ नवंबर, १९५६ नै तत्कालीन अजमेर-मेरवाड़ा नै ई सामल कर लियौ गयौ। इणी रै साथै आबू-दिलवाड़ा अर मध्यभारत में मंदसौर जिलै री मानपुरा तहसील रौ सुनेलटप्पौ गांव राजस्थान मांय सामल करीजियौ अर कोटा जिलै रौ सिरोंज मध्यप्रदेश नै हस्तांतरित करीजियौ। इण तरै १८ मार्च, १९४८ नै सरू हुई रियासतां रै अेकीकरण सूं राजस्थान निरमाण री प्रक्रिया १ नवंबर, १९५६ नै जाय' र विभिन्न चरणां में पूरी हुयी अर आज रौ 'राजस्थान' अस्तित्व में आयौ।

'संयुक्त राजस्थान' बणियां पछै च्यार मोटी रियासतां जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर जैसलमेर अैड़ी रियासतां ही जिणां रौ भारत संघ मांय विलय नीं हुयौ हौ। भारत सरकार ७ जनवरी, १९४८ नै इण गत रौ अैलान कर दियौ हौ के १० लाख सूं ऊपर आबादी अर १ करोड़ सूं बत्ती सालाना आमद वाळी रियासतां न्यारी इकाई (राज्य) रैय सकै। इण बात मुजब जयपुर, जोधपुर अर बीकानेर रियासतां न्यारी रैय सकै ही। उदयपुर रै 'संयुक्त राजस्थान' में मिलियां सूं अै मोटोड़ी रियासतां ई डिग्गू-पिच्छू हुयगी। बीकानेर महाराजा शार्दूलसिंह आपरै दीवान नै महाराणा कनै भेज' र कैवायौ के महाराणा कोई अैड़ौ फैसलौ नीं करै जिणसूं दूजा रजवाड़ां नै झुकणौ पड़ै। महाराणा पडूत्तर दियौ के अबै समै बदळग्यौ अर सगळी रियासतां रै झुकणै में इज सार है। २० फरवरी, १९४८ नै सरदार पटेल बीकानेर महाराजा नै कागद भेज' र थ्यावस दिरायौ के जठै लग मोटी रियासतां रा राजा अर जनता री मंसा नीं हुवैला, वठै तक वां रियासतां रौ विलय माडै भवै ई नीं करीजैला। पण असल में राजस्थान री जनता तौ चावती ही के सगळा रजवाड़ा मिल' र अेकमेक हुय जावै। अखिल भारतीय प्रांतीय सभा २० जनवरी, १९४८ नै इण गत रौ प्रस्ताव पास कर दियौ हौ। इण बगत जागीरदार जलूस काढ' र राजावां नै भरोसौ दिरायौ के वै राजावां रै साथै है अर उणां री रियासतां बणियोड़ी रैवणी चाइजै। इणसूं आ बात भारत सरकार रै हियै ढूकगी के जे सगळी रियासतां रौ अेकीकरण नीं हुयौ तौ सामंती ताकतां रा फितूर नीं मिटैला। पछै जोधपुर, जैसलमेर अर बीकानेर री रियासतां पाकिस्तान री सींव रै अड़ौअड़ ही इण वास्तै आं माथै कदैई हमलौ हुय सकतौ हौ। अै तीनूं रियासतां काळ रै बख में झिलियोड़ी ही अर इकांतरै काळ अठै रा लोगां नै भूख-बिखै सूं फंफेड़तौ हौ। असल में रियासती विभाग री मरजी तौ आ ही के आं रियासतां नै काठियावाड़ साथै मिळाय' र भारत सरकार रै शासन हेटै अेक राज्य बणाय दियौ जावै। पण राजस्थान रा जन-नेता इण बात रौ विरोध करियौ,

जिणसूं रियासती विभाग री दाळ गळी कोनी। कांग्रेस नेतावां रै साथै समाजवादी नेता ई 'महाराजस्थान' री मांग करण लागिया। जयप्रकाश नारायण उदयपुर री अेक आम सभा मांय 'महाराजस्थान' री मांग करी अर आ धमकी दीवी के २० नवंबर तांई जोधपुर, जैसलमेर अर बीकानेर रियासतां नै राजस्थान मांय नीं मिलायौ तौ आंदोलन छिड़ जावैला। राजस्थान री सगळी रियासतां रौ अेक विधान अर शासन हुवणौ चाइजै। नतीजन भारत सरकार कनै 'महाराजस्थान' बणावण रै अलावा चारौ ई कांई हौ? सेवट जोधपुर, जैसलमेर अर बीकानेर रै राजावां सूं बातचीत सरू करीजी अर ९ जनवरी, १९४९ नै ज्यूं-त्यूं 'महाराजस्थान' मांय मिलण सारू हांकारौ भरवाय ई लियौ। १४ जनवरी, १९४९ नै उदयपुर री अेक सभा मांय सरदार पटेल अेलान करियौ के जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर जैसलमेर रियासतां 'राजस्थान संघ' में मिलण सारू हामळ भर दीवी है। जयपुर नरेश इण रा राजप्रमुख अर जयपुर राजधानी मुकर करीजी। जोधपुर अर कोटा नरेशां नै खास उपराजप्रमुख बणावण री बात ई अंगेजीजी। आ बात ई खुलासै हुयगी के राजप्रमुख अर विधानसभा भारत सरकार रै कैणै में रैवैला।

३० मार्च, १९४९ नै 'वृहत् राजस्थान' रै गठन अर महाराजा मानसिंह नै राजप्रमुख बणायै जावण रौ अेक भव्य समारोह जयपुर रै सिटी पैलेस मांय आयोजित करीजियौ। समारोह रै दिन सरदार वल्लभभाई पटेल नै हवाई जहाज सूं जयपुर पूगणौ हौ, पण जद उणां रौ जहाज बगत माथै जयपुर नीं पूगियौ तौ सिटी पैलेस मांय मौजूद जयपुर राज परिवार नै चिंता हुवण लागी। उणी हवाई जहाज सूं जोधपुर महाराजा हनुवंतसिंह ई आवण वाळा हा। तीन-चार घंटां बाद सरदार पटेल, मनीभाई पटेल, जोधपुर महाराजा हनुवंतसिंह कार सूं रामबाग पूगिया। उण बगत जद महाराजा मानसिंह अर उणां रा सलाहकार इणी विषय माथै विचार-विमर्श कर रैया हा। उणां रा अेडीसी मानसिंह बरवाड़ा उणां सूं कैयौ के— ''सर, सरदार पटेल हैज अराइव्ड!'' तौ महाराज कैयौ के— ''डोंट बी अे ब्लडीफूल, व्हेयर इज ही?'' अेडीसी उणां नै बतायौ के वै बडी महाराणी सायबा रै कनै बैठा है। सरदार पटेल तद बतायौ के हवाई जहाज में तकनीकी खराबी री वजै सूं उणां नै अचरोल रै कनै नदी मांय उतरणौ पड़्यौ अर उणां नै कार सूं अठै तांई पुगाईजियौ। भव्य समारोह बिना किणी रुकावट रै चालियौ।

समारोह सिटी पैलेस रै दीवाने-आम मांय आयोजित करियौ गयौ, जिणनै महाराणी गायत्री देवी जाळी रै परदै रै लारै सूं देखियौ हौ। गायत्री देवी नै समारोह मांय देख' र लोग औ अनुमान लगायौ के वै जयपुर रियासत रै भारतीय संघ मांय विलय रै इण समारोह सूं राजी नीं हा। राजस्थान री राजधानी कठै हुवै, इणरै वास्तै अेक कमेटी रौ गठन करीजियौ। कमेटी जोधपुर, उदयपुर अर अजमेर रौ निरीक्षण करियौ। आखिर में कमेटी निरणै करियौ के जयपुर नै नवै राजस्थान री राजधानी बणायौ जावै, क्यूंकै अठै अनेक सुविधावां ही, साथै ई महाराजा मानसिंह रै शासन रै बगत ई केई सरकारी भवनां रौ निरमाण हुयोड़ौ हौ। उण बगत जोधपुर अर अजमेर री जनता नै घणी ईरसा हुयी। जयपुर रा लोग घणा राजी हुया हा।

नवै ओहदै रै मुजब मानसिंह राज्य रा राजप्रमुख (गवर्नर) हा, पण उणां रा कर्तव्य घणा औपचारिक रैयग्या हा। उणां नै राज्य विधानसभा रौ सत्र सरू करणौ हुवतौ, मंत्रियां नै शपथ दिरावणी हुवती अर राजनीतिक गतिविधियां रै दौरान समस्यावां सुळझावणी अर केन्द्रीय सरकार री सहमति सूं नवा चुणाव करावणा हुवता हा। इणरै अलावा उणां नै आपरै शासनकाल रै दौरान हुवण वाले सगळै सामाजिक कर्तव्यां नै संभाळणौ हुवतौ हौ। कोटा महाराजा नै मानसिंह री अनुपस्थिति में उणां रै उप राजप्रमुख रै रूप में प्रतिनियुक्त करीजियौ हौ अर उदयपुर रै महाराणा नै 'महाराजा प्रमुख' री उपाधि सूं सम्मानित करियौ गयौ हौ। वै सिरफ पद सूं इज राजप्रमुख सूं ऊंचा हा, पण उणां रौ कोई विशेष कार्यभार नीं हौ। महाराजा मानसिंह रौ पैलौ काम हौ, राजपूत राज्य अर जयपुर राज्य री सेनावां रौ विघटन करणौ। इणरौ पैलौ समारोह नवै सचिवालय रै सामी हुयौ। वठै अेक विसाळ खुलौ मैदान हौ, जिकौ केई बरसां सू सेना रौ परेड मैदान हुया करतौ हौ।

जयपुर रियासत री 'फस्र्ट जयपुर इन्फैन्ट्री' वठै मार्चपास्ट करियौ अर महाराजा मानसिंह सलामी लेय' र उणां नै सूंपीजियै ध्वजां नै स्वीकार करियौ, पछै अश्वारोही सेनावां आपरै अैतिहासिक नामां रै साथै कच्छावा घोड़ा, राजेन्द्र हजारी गाडर्््स सामी सूं निसरता थकां अेक-अेक कर' र आपरौ ध्वज महाराजा नै सूंपता गया। इण बदळाव सूं दरसकां री आंखियां मांय आंसू हा, पण मानसिंह गरब रै साथै अर कीं शांति-भाव सूं समारोह रौ अवलोकन करता रैया अर ध्वजां नै स्वीकार करता रैया। सिरफ उणां री प्रिय रेजीमेंट 'सवाई मान गार्ड' ,

जिणरी थरपणा खुद महाराजा मानसिंह करी ही, भारतीय सेना मांय विलय रै बाद ई आपरी पिछाण बणाई राखी। वा आज ई 'सत्रह राजपूताना राइफल्स' रै नाम सूं जाणीजै।

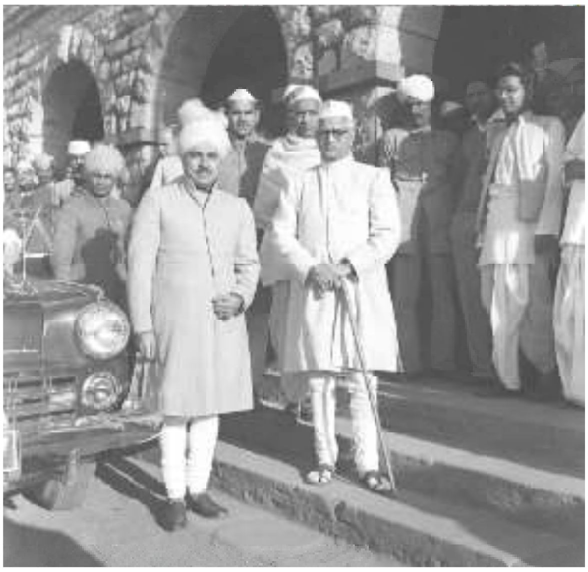

—१७/१९५, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-३४२००८